Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

कोल एवं गोंड जनजातियों में शिक्षा के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन (सतना जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. सीमा पटेल
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
स्वामी जयदेव योगीराज पी.जी. कालेज मुजफ्फरपुर, मदनापुर जिला शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

Article Info
Volume 8, Issue 1

Page Number : 38-46

Publication Issue :
January-February-2025

Article History
Accepted : 20 Jan 2025
Published : 05 Feb 2025

शोधसारांश– आज के युग में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति समाज में व्यक्ति के जीवन का निर्धारण एक महत्वपूर्ण साधन शिक्षा का स्तर है। यह एक अर्जनात्मक आधार है जिसे व्यक्ति अपनी योग्यता क्षमता और परिश्रम से प्राप्त करता है। शिक्षा के द्वारा न केवल व्यक्तित्व में अन्तर्निहत गुणों का प्रस्फुटन होता है, बल्कि शिक्षित व्यक्ति को उसके बोधगम्यता का स्तर मालुम होता है। मैकाइवर ने कहा है कि ज्ञान वह शक्ति है जो न केवल भौतिक पदाथा पर नियंत्रण रखता है, वरन इसके द्वारा नये लक्ष्यों अवसरों का चुनाव यहाँ तक कि नये प्रलोभनों और इच्छाओं तथा असीमित धैर्य एवं साधन का मार्ग खुलता है जिसमें अभी अज्ञात भय एवं अन्धविश्वास लुप्त हो जाते हैं। ज्ञान का विस्तार शिक्षा से ही सम्भव होता है।शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जिससे व्यक्ति की सामाजिक स्थिति शीघ्रता से परिवर्तित होती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के अन्दर जागरूकता के साथ–साथ सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं का ज्ञान होता है। इसके द्वारा व्यक्ति को नये अवसर मिलते हैं जिससे वह अपनी स्थिति को बदल सकता है। शिक्षा के बिना आर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्ति की स्थिति भी समाज में नीच गिरने लगती है। अतः शिक्षा का मानव के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण योगदान है। आजकल समाज में व्यक्ति शिक्षा को आसानी से ग्रहण कर सकता है क्योंकि सरकार हर एक गाँव में प्रौढ एवं अनौपचारिक शिक्षा तथा प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम चल रहा है। मजूमदार ने बताया है कि आदिवासियों के पिछड़े एवं निर्धन होने का कारण शिक्षा का न होना है। शिक्षा व्यक्तित्व विकास एवं अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। वर्तमान समय में आदिवासी समुदाय जटिल सामाजिक संगठन से सम्पर्क स्थापित करने लगा है। अतः उसको समझने एवं

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited
S

अनुरूप बनाने के लिए शिक्षा अपरिहार्य साधन है। आधुनिक समाज में व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति और भूमिका निर्धारण में जिन नवीन अर्जनात्मक आधारों का विकास हुआ है, उनमें से प्रमुख आधार व्यक्ति की शैक्षणिक उपलब्धि हैं।

मुख्य शब्द –गोंड जनजाति, सामाजिक परिवर्तन, पारिवारिक एवं वैवाहिक स्थिति।

धारणा :– सतना जिले के कोल एवं गोड़ जनजातियों के समाज में पुरूषों का स्थान स्त्रियों से ऊपर है। फिर भी स्त्रियों को बहुत से ऐसे अधिकार एवं सुविधाएँ हैं, जो तथाकथित सभ्य समाज में कभी नहीं पायी जाती थी। जनजतियों में बाल विवाह, दहेज प्रथा या सती प्रथा नहीं थी। इस तरह बाल–विधवाओं संबंधी सामाजिक बुराइयाँ उनमें नहीं पनपी सभ्य समाज का एक ही दुर्गुण जनजातियाँ में समान रूप से पाया जाता है और वह है–बहु विवाह प्रथा जनजातियों में तलाक सरलता से दिया जा सकता है और इस स्थिति में भी स्त्री कभी आर्थिक शोषण का शिकार नहीं होती। कोल एवं गोंड जनजातियों में स्त्रियों को एक मूल्यवान वस्तु माना जाता है, क्योंकि उन्हें वधू शुल्क चुकाना पड़ता है किन्तु उस तुलना में हिन्दुओं के उच्च वर्ग में स्त्रियों को अपदार्थ ही माना जाता है। कोल एवं गोंड जनजाति की स्त्री, पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य काया में बराबरी से भाग लेती है। धार्मिक कार्यों में उसे उतना स्थान प्राप्त नहीं है। पुरूष वर्ग शिकार और कृषि जैसे अधिक श्रम वाले कार्य करता है तथा परिवार के भरण–पोषण की जिम्मेदारी उसी पर होती है। सामाजिक संगठनों जैसे पंचायत तथा मुखिया का पद भी पुरूषों को ही प्राप्त होता है। व्यक्तिगत स्तर पर अवश्य ही कुछ कोल एवं गोड जनजाति पुरुषों द्वारा स्त्रियों के साथ अभद्र व्यवहार की घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। जैसे घर में किसी बात पर विवाद होने पर पति द्वारा पत्नी को गाली देना या कभी–कभार मारपीट की घटनायें भी सामने आती हैं। जिले के कोल एवं गोड़ जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में कुछ अन्तर दिखाई देते है। इसका मूल कारण सामाजिक आर्थिक स्तरीकरण है, जो जातियों के प्रभाव के कारण तथा एक समूह को दूसरे से भौगोलिक दूरी के कारण विकसित हुआ है। कोल एवं गोड जनजातियों में भी एक वर्ग उच्च है तो दूसरा निम्न है।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में कोल एवं गोड़ जनजाति में गोत्र का महत्वपूर्ण स्थान है। कोल जनजाति में कई गोत्र होते है। एक गोत्र समूह अपनी उत्पत्ति एक ही पूर्वज से मानता है। यहाँ गोत्र बर्हिविवाही होते है जबकि जाति अर्न्तविवाही होती है अर्थात् जनजाति के लोग अपनी जाति के बाहर एवं अपने ही गोत्र में शादी विवाह नहीं कर सकते हैं। यह जनजाति स्वनिर्मित सामाजिक नियमों द्वारा अनुशासित है। इनकी अर्थव्यवस्था में स्त्रियों की भूमिका सभ्य समाज की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होती है। इस समाज में नई पीढ़ी के पालन–पोषण की जिम्मेदारी परिवार के मुखिया की होती है किन्तु उसके द्वारा निर्देशित कार्यों में परिवार के समस्त सदस्यों की भागेदारी होती है।

बच्चे विभिन्न कार्यों, आदर्शों एवं नैतिक दायित्वों की जानकारी समुदाय के कार्यों का अनुसरण कर प्राप्त करते हैं। इनकी अर्थव्यवस्था में स्त्रियों की समान साझेदारी होती है और बच्चे एवं युवा भो समुदाय के बीच रहकर अपने उत्तरदायित्व, गृहस्थ कार्य एवं अर्थव्यवस्था में निर्वहन करते है।

कोल एवं गोड़ जनजातीय परिवार पितृवंशीय होते हैं। यहाँ परिवार में पति के अतिरिक्त और भी सदस्य होते हैं। पुरुष एवं स्त्री के बीच समाज में स्वीकृत नियमों के अनुसार विवाह होता हैं. इसके पश्चात् वे विवाह के बंधन में बंध जाते हैं, जिन्हें पति–पत्नी के रूप में रहने की स्वीकृति समाज प्रदान कर देता है। विवाह के बाद वर एवं कन्या पक्ष के लोग भी आपस में नातेदारी रिश्तेदारी में बंध जाते हैं। इन सबके विशिष्ट पद होते हैं जिन्हें विभिन्न नामों से पुकारा जाता है।

कोल एवं गोड़ जनजातियों की सभ्यता एवं संस्कृति ने भौगालिक परिस्थितियों का जितना अनुशरण किया है उतना अन्य किसी जाति ने नहीं। भौगोलिक परिस्थितियों के कारण भी हमारे देश में बाहर से अनेक जातियाँ आई और विभिन्न संस्कृतियों के समन्वय से भारतीय संस्कृति का जन्म हुआ। निःसंदेह भारतीय संस्कृति के निर्माण में आया का बहुत बड़ा योगदान रहा है, किन्तु उनके आगमन के पूर्व भारतवर्ष की अपनी संस्कृति थी। आवास किसी जाति की संस्कृति के अध्ययन का महत्वपूर्ण अंग है। आवास में उसकी संस्कृति की झांकी स्पष्ट दिखाई पड़ती है। जनजातियों के आवास के पर्यवेक्षण से उनकी प्रवृत्तियाँ, उनके विश्वास, कला आदि का सम्यक परिचय पाया जा सकता है।

पूर्व साहित्य का अध्ययन :–

डॉ. धर्मवीर (1998)[1] ने ''दलित विमर्श और स्वास्थ्य समस्याएं'' नामक आलेख में लिखा है कि सामाजिक और पारिवारिक स्वास्थ्य के लिये भी अच्छा यही है कि कोई दबाव बनाने या उसके खिलाफ नाकेबंदी खड़ी करने के बजाय उसे उसके असली रूप में आने दिया जाय, क्योंकि देश आज भी तीन हजार सालों के बाद मूकों की बात सुनने के लिये तैयार नहीं है। यह भारतीय समाज विचार के स्तर पर अभी भी इतना असहिष्णु और पिछड़ा हुआ है।

डॉ. तुलसीराम ने सौंदर्यशास्त्र तथा कला विहीन दलित साहित्य में लिखते हैं कि दलित साहित्य का जनक कौन है, स्वयं दलित या सवर्ण ? यह कोई सिक्का उछालकर हल की जाने वाली समस्या नहीं है।

के.एल.चंतरीक एवं डॉ. धीर सिंह (1985)[2] ने ''भारतीय दलित आंदोलन की रूपरेखा'' में व्याख्या किया है कि दलित समाज भारतीय समाज का ऐसा अभिन्न अंग है जो सवर्ण समाज की ओर से अस्वीकृत तथा तिरस्कृत जीवन धारा के समान है । यह ऐतिहासिक सच्चाई है कि साहित्य में दलित चेतना की लहर का आरंभ और विकास महाराष्ट्र में ही हुआ है और मराठी के बाद तेलगु, गुजराती, हिन्दी, पंजाबी, बंगला, उड़िसा भाषा में दलित साहित्य आकार ग्रहण करता है। अब तो लगभग सभी भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य आकार ग्रहण करता है। अब तो लगभग सभी भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य जोर पकड़ रहा है। साहित्य में दलित चेतना केवल एक विचारात्मक चेतना ही नहीं बल्कि इसमें मानवीय संघर्ष और अधिकार की लौ भी शामिल है। दलितों में मन में स्वाभिमान जाग उठा है, इसकी सहायता से ही स्वविचारों को साहित्य का रूप देने में सफल सिद्ध हो रहें है।

त्रिपाठी आर.एस. (1986)[3] ने ''आदिवासी क्षेत्रों के विकास की रणनीतिः मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में'', **बुच एम.वी.ई.डी. (1972)**[4] प्रथम सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, **डॉ0 विवेक कुमार (2007)**[5]''दलित समाज पुरानी समस्याएँ नई आकांक्षाएँ'', **डॉ0 माता प्रसाद (982)**[6]– ''भारत में सामाजिक परिवर्तन के प्रेरणा स्रोत'', **कमलाकांत (2009)**[7], दलितों के मसीहा कांशीराम, **हरभजन लाल (2002)**[8] ''दलित प्रगति की राहें'' **लोकेश कुमार गौतम (1998)**[9] ''दलित क्रांति और बुद्धायन'' **कमल भारती (2004)**[10] ''मायावती और दलित आन्दोलन'' आदि दलित क्षेत्र में किये गये महत्वपूर्ण कार्य है।

उद्देश्य :–

1. कोल एवं गोड़ जनजातियों के सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करना।
2. कोल एवं गोड़ जनजातियों के शिक्षा के लिये क्रियान्वित योजनाओं की जानकारी प्राप्त करना ।
3. कोल एवं गोड़ जनजातियों के शैक्षिक एवं आवासीय योजनाओं की उपयोगिता का अध्ययन करना ।
4. शासन स्तर पर लागू की गई योजनाओं के प्रति कोल एवं गोड़ जनजातियों के दृष्टिकोण एवं नजरिये का अध्ययन करना ।
5. कोल एवं गोड जनजातियों के वस्त्र एवं आभूषणों पर आधुनिकता के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. कोल एवं गोड़ जनजातियों के परम्पराओं पर आधुनिकता के प्रभाव का अध्ययन करना ।
7. कोल एवं गोड जनजातियों के उत्सवों में आधुनिकता का प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको पर आधारित है। प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिये विचार पूर्वक निदर्शन प्रविधि का उपयोग किया गया है। चयनित सूचनादाताओं से साक्षात्कार अनुसूची द्वारा सूचनायें संकलित की गयी है उत्तरदाताओं का चयन सर्वेक्षण, निदर्शन पद्धति के माध्यम से किया गया है। अध्ययन के लिये कुल 50 उत्तरदातों का चयन किया गया है अध्ययन में अवलोकन – सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है।

द्वितीयक आंकड़ो के लिये समाचार पत्र पत्रिका, सरकारी, सांख्यिकी आंकड़े, पुस्तके व इन्टरनेट का प्रयोग किया गया है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर विश्लेषण कर निष्कर्ष निकलने का प्रयास किया जायेगा।

अध्ययन क्षेत्र :–

चूँकि शोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र सतना नगर को लिया गया है। सतना जिला का क्षेत्रफल 7502 वर्ग किमी. है। जनगणना 2011 के अनुसार सतना जिला की जनसंख्या 22,28,935है, जिसमें पुरूष 11,57,495एवं महिला 10,71,440शेष एवं अन्य वृद्ध एवं बच्चे सम्मिलित है। सतना जिले का जनसंख्या वृद्धि 19.19%है, जिले का लिंग अनुपात 1000 पुरूष पर 926 महिला है तथा साक्षरता दर 72.26%है जिसमें पुरूष साक्षरता 81.37%एवं महिला साक्षरता 62.45%है। सतना जिले जनसंख्या घनत्व 297 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है।

उपकल्पना :–

1. गोंड जनजाति के लोगों का शिक्षा का स्तर निम्न है।
2. ये लोग परम्परावादी है परन्तु आधुनिकता की ओर अग्रसर है।
3. इनमें राजनीतिक जागरूकता की कमी है।
4. गोंड जनजाति में आर्थिक स्थिति कमजोर है।

तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण :– कोल एवं गोड जनजाति परम्परागत रूप से जीवन के सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अत्यन्त पीछे रही है। जंगली पठारी तथा दुर्गम स्थानों में निवास करने अमब चेप कारण वे आधुनिक शैक्षणिक सुविधाओं की परिधि से सामान्यतः दूर रहे है। जंगली वस्तुओं के एकत्रीकरण, कृषि मजदूरी का अन्य प्रकार की मजदूरी पर निर्भर रहने के कारण नवीन शैक्षणिक सुविधाओं का लाभ इस जनजाति के सदस्यों ने सामान्यतः नहीं उठाया है। यद्यपि हनुमना जनपद में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना एवं विस्तार हुआ है। जनजातीय समूह इन शैक्षणिक सुविधाओं से विशेष रूप से लाभान्वित नहीं हुए हैं। अध्ययन हेतु चयिनत जनजातियों के शैक्षिणक स्तर का निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1

कोल एवं गोड जनजातियों के उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तर

क्र.	शिक्षा का स्तर	परिवारों की संख्या			
		कोल जनजाति		गोंड जनजाति	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	साक्षर	16	32	14	28
2	निरक्षर	34	68	36	72
	योग	**50**	**100**	**50**	**100**

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त तथ्यों के आधार पर

उपरोक्त सारणी के विवेचन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र न्यादर्श में चयनित कोल एवं गोड़ परिवारों से साक्षात्कार के माध्यम से उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तर संबंधी जानकारी हेतु तथ्य का संकलन किया गया है। शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित कुल 50 कोल एवं 50 गोड़ परिवारों का चयन कर उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तर संबंधी जानकारी प्राप्त की गई। जिसमें कोल जनजातियों के परिवारों में 32 प्रतिशत परिवार साक्षर हैं, जबकि 68 प्रतिशत परिवार निरक्षर हैं। इसी प्रकार गोड़ जनजातियों के परिवारों में 28 प्रतिशत परिवार साक्षर है, जबकि 72 प्रतिशत परिवार निरक्षर हैं। अतः कोल एवं गोड़ जनजातियो की तुलना करने पर ज्ञात होता है कि गोड़ों के अपेक्षा कोलों में साक्षरता ज्यादा है

आयु जाति एवं शिक्षा – भारतीय सामाजिक संरचना में निम्न जातियों की अपेक्षा उच्च जातियाँ अधिक शिक्षित पायी गयी है। सामाजिक संस्तरण में प्रायः उस जातीय समूह को उच्च समझा जाता है जिसके सदस्य उच्च शिक्षा प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न आयु समूह एवं जातीय समूह को क्रमशः सारणी में रखकर विश्लेषित किया गया है –

सारणी क्रमांक 2

कोल एवं गोड जनजातियों के उत्तरदाताओं के आयु एवं शैक्षिक स्तर

क्र	आयु		परिवारों की संख्या			
			कोल जनजाति		गोंड जनजाति	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	निम्न आयु (20 वर्ष से कम)	साक्षर	7	14	4	08
		निरक्षर	4	8	2	04
2.	मध्य आयु (20–40 वर्ष)	साक्षर	8	16	16	32
		निरक्षर	23	46	24	48
3.	उच्च आयु (41 और इससे ऊपर)	साक्षर	2	04	1	02
		निरक्षर	6	12	3	06
	योग		**50**	**100**	**50**	**100**

स्रोत व्यक्तिगत सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त तथ्यों के आधार पर

उपरोक्त सारणी के विवेचन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र न्यादर्श में चयनित कोल एवं गोड़ परिवारों से साक्षात्कार के माध्यम से उत्तरदाताओं के आयु एवं शैक्षिक स्तर संबंधी जानकारी हेतु तथ्य का संकलन किया गया है। शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित कुल 50 कोल एवं 50 गोड़ परिवारों का चयन कर उत्तरदाताओं के आयु एवं शैक्षिक स्तर संबंधी जानकारी प्राप्त की गई। जिसमें कोल जनजातियों के परिवारों में निम्न आय वर्ग के 14 प्रतिशत परिवार साक्षर हैं, जबकि 8 प्रतिशत परिवार निरक्षर हैं. मध्य आयु वर्ग के 16 प्रतिशत परिवार साक्षर हैं, जबकि 46 प्रतिशत परिवार निरक्षर हैं, उच्च आयु वर्ग के 04 प्रतिशत परिवार साक्षर हैं, जबकि 12 प्रतिशत परिवार निरक्षर हैं। इसी प्रकार गोड़ जनजातियों के परिवारों में निम्न आय वर्ग के 08 प्रतिशत परिवार साक्षर हैं, जबकि 04 प्रतिशत परिवार निरक्षर हैं, मध्य आयु वर्ग के 32 प्रतिशत परिवार साक्षर हैं, जबकि 48 प्रतिशत परिवार निरक्षर हैं, उच्च आयु वर्ग के 02 प्रतिशत परिवार साक्षर हैं, जबकि 106 प्रतिशत परिवार निरक्षर हैं। अतः कोल एवं गोड़ जनजातियों की तुलना करने पर ज्ञात होता है कि गोड़ों के अपेक्षा कोलों में मध्य आयु वर्ग में निरक्षरता कम है। इसी प्रकार साक्षरता गोड़ों में ज्यादा है।

जनजातियों में शिक्षा का आधुनिकीकरण – शिक्षित होने से व्यक्ति में विनयशीलता जाती है तथा एक आदर्श व प्रगति समाज के निर्माण में इसी विनयशीलता के महत्व को मनुष्य ने स्वीकार किया है। यह तभी संभव है जब मानव शिक्षा ग्रहण करेगा जिससे अपने और अपने राष्ट्र का निर्माण कर सकेगा। यह शिक्षा मानव और पशु को अलग कतार में खड़ी करती है, क्योंकि मनुष्य के पास अन्य प्राणियों की अपेक्षा विकसित मस्तिष्क पाया जाता है और विकसित मस्तिष्क पाये जाने से वह एक सुखमय सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करता है। मानव जिन जानकारियों को जानने के लिए या समझने के लिए प्रयत्नशील होता है उनमें से शिक्षा उनको और अधिक सम्बलता प्रदान करती है।

मनुष्य अपने इसी बुद्धिबल के कारण एक ऐसे मानवीय समाज की रचना कर पाने में सफल हो सका है।

जीवन का प्रत्येक अनुभव शिक्षा है, यथार्थ में सम्पूर्ण जीवन ही शिक्षा है। शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है, व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक जो कुछ भी सीखता है, अनुभव करता है, वह सब शिक्षा ही है। शिक्षा को दो रूप में स्पष्ट किया जा सकता है, एक तो वह जो विद्यालय में बालक को एक सुनिश्चित पाठ्यक्रम के अनुसार दी जाती है जिसमें बालक एक परिपाटी के आधार पर ग्रहण करता है। दूसरे रूप में वह है जिसे सम्पूर्ण सृष्टि से प्रकृति, जड, चेतन आदि से अमब फत सीखता है। इस सीखने की प्रक्रिया को ही शिक्षा कहते हैं। शिक्षा बालक के अंदर छुपी हुई शक्तियों को उभारकर उसके आंतरिक गुणों को जगमगा देती है जिसके प्रकाश में बालक स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है और समाज को भी लाभ पहुंचाता है।

अशिक्षित होने के कारण इनके बारे में जब जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया तो उससे यह ज्ञात हुआ कि केवल शैक्षणिक सुविधायें बढ़ाने से कोल एवं गोड़ जनजाति में साक्षरता एवं शिक्षा का प्रसार नहीं हो पायेगा। माध्यमिक विद्यालय में पहुँचने की उम्र तक वह कमाऊ पूत समझा जाने लगता है. जिससे उसका विद्यालय जाना बंद कर दिया जाता है। पढाई के लिये आवश्यक सामग्री जुटाना भी एक समस्या ही है। इन परिवारों के लिए शासन के द्वारा इनकी अशिक्षा की समस्या को दूर करने के लिये छात्रवृत्ति शिष्यवृत्ति देना पुस्तक आदि उपलब्ध कराना तथा विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहन देना, मध्यान्ह भोजन प्रदान करना आदि जैसे कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इनके गांव में शिक्षा के स्तर की उपलब्धता के संबंध में जो जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

क्र	आयु	परिवारों की संख्या			
		कोल जनजाति		गोंड जनजाति	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	शाला नहीं हैं	1	02	3	06
2.	प्राथमिक शालाएं है	27	54	27	54
3.	पूर्व माध्यमिक शालाये भी है	14	28	12	24
4.	उच्चतर माध्यमिक शालाएं भी है	8	16	8	16
	योग	**50**	**100**	**50**	**100**

निष्कर्ष :– शिक्षा व्यक्ति के जीवनयापन और नागरिक कर्तव्यों के लिए तैयार करती है। यह व्यक्ति के व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण न ऐसा परिवर्तन लाती है। जो देश व समाज के लिए हितकर होता है। हर देश चाहता है कि उसके सभी नागरिक शिक्षित हो किन्तु इस लक्ष्य की प्राप्ति एक कठिन प्रश्न है। किसी भी राष्ट्र एवं उनके नागरिकों के चहुँमुखी विकास के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण तत्व है। देश के संविधान और मध्यप्रदेश की जन शिक्षा अधिनियम दोनों इस बात पर जोर देत है कि 6 से 14 वर्ष का प्रत्येक बालक स्कूल जाये और अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करे। यह हर एक बच्चे का मौलिक अधिकार भी है, लेकिन ऐसे कई बच्चे हैं जिन्हें अपनी शिक्षा पूर्ण करने का अवसर ही नहीं

मिल पाता ऐसे बच्चों में कोल एवं गोड जनजातियों के बच्चों की संख्या बहुत अधिक है। कोल एवं गोड जनजातियों की शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

सतना जिले की कोल एवं गोड़ जनजाति की शैक्षणिक स्थिति अन्य जनजातियों से भी निम्न हालत में है क्योंकि मैदानी क्षेत्र तथा पर्वतीय एवं जंगली क्षेत्रों में अन्य लोगों के प्रवेश के साथ ही कोल एवं गोड अपेक्षाकृत अधिक दुर्गम स्थानों में बस गये, जहाँ पर न तो सड़क है न ही आसान पगडंडी का रास्ता, दुर्गम स्थानों में दुनिया से बेखबर शासन की महत्वपूर्ण योजनाओं से अंजान, अशिक्षित होकर रह रही है।सतना जिले में रहने वाले कोल गोंड परिवार के स्वरूप में बदलाव के साथ–साथ उनके कार्यो मे ंपरिवर्तन हुआ है। कृषि कार्य गोंडों का प्रमुख व्यवसाय था किन्तु वर्तमान समय मे ंभी ज्यादातर परिवार कृषि कार्य मे लगा है। गोंड जनजाति की जो पारिवारिक सम्बन्ध है वे अच्छे है इसका कारण यह है कि संयुक्त परिवार टूटकर एकल या एकाकी परिवार का रूप ले लिये है जिसके कारण पारिवारिक सम्बन्धों में ज्यादा तनाव नहीं आता है।

सुझाव :–

1. कोल एवं गोंड जनजाति विकास के लिये आधुनिकतम शिक्षा की व्यवस्था की जाये तथा उन्हें टेक्निकल कोर्स कराये जाये साथ ही उनकी पढ़ाई के लिये कम ब्याज पद ऋण मुहैया कराया जाय।
2. उन व्यक्तियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कानूनी कार्यवाही किया जाय तो भोले–भोले अशिक्षित जनजाति के बच्चे एवं महिलाओं तथा पुरूषो का शारीरिक एवं आर्थिक रूप में शोषण करते हैं।
3. जनजातीय क्षेत्रों में पुलिस चौकी की व्यवस्था की जाये तथा उन पर हो रहे अत्याचारों की कार्यवाही सही समय पर की जाये।
4. युवागृह आदिवासी युवकों और युवतियों के लिये शिक्षा के साधन होते हैं। अतः युवागृहों को नष्ट होने से बचाया जाना चाहिए तथा उनका पुनर्रूत्थान किया जाये।
5. स्वास्थ्य सम्बधी सुझाव आदिवासी युवकों और युवतियों को कम्पाउंडर और दाई का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
6. जनजातीयों में जागरूकता का विकास किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. नायडू पी.आर. (2008) भारत के आदिवासी– विकास की समस्याएँ राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली पृ. 09
2. डॉ. धर्मवीर (1998) ने ''जनजातीय समस्याएं'' हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल पृ. 04।
3. चंतरीक के.एल. एवं डॉ. धीर सिंह (1985) ने ''भारतीय दलित आंदोलन की रूपरेखा'' विवेक प्रकाशन दिल्ली, प्राक्कथन से उद्घृत पृ. 01।
4. त्रिपाठी, आर.एस. (1986), आदिवासी क्षेत्रों के विकास की रणनीति : मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में, मानव 14:4, पृ. 23–24।
5. बुच एम वी ई डी (1972) – प्रथम सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन, एन सी ई आर टी नई दिल्ली।

6. डॉ0 माता प्रसाद (982)–''भारत में सामाजिक परिवर्तन के प्रेरणा स्रोत'', मोहन चन्द्र नार्दन बुक सेन्टर, नई दिल्ली 1986
7. शर्मा ब्रह्मदेव (1994) आदिवासी विकास–एक सैद्धान्तिक विवेचन (म.प्र.) हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल पृ. 04।
8. सिद्दीकी शाहेदा, रावत मनोज (2014) कोल जनजाति की महिलाओं में वैवाहिक परिवर्तन 'रिसर्च जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइसेंज, गायत्री पब्लिकेशन सतना पृ. 154–156
9. शर्मा श्रीनाथ (2010) 'जनजाति समाजशास्त्र' म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृ. 65।
10. तिवारी शिवकुमार व शर्मा, कमल(1994)'मध्यप्रदेश की जनजातियॉ एवं समाज व्यवस्था' पृ. 24।
11. सिंह वीरेन्द्र (2007) 'मध्यप्रदेश सामान्य ज्ञान' अरिहंत पब्लिकेशन्स मेरठ पृ. 71
12. मीणा लक्ष्मीनारायण (1991) ''जनजाति–एक परिचय' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृ. 16।
13. सिन्हा आर.के. (1983) 'जनजाति' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल। पृ. 11।
14. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, रीवा – 2011
15. जनगणना रिपोर्ट, 2011, भारत सरकार नई दिल्ली